International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(5): 29-30

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(5): 29-30
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 22-05-2015
Accepted: 23-06-2015

डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

Correspondence
डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

स्त्री विमर्श का वैदिक स्वरूप

माधवी शर्मा

दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि स्त्री की उन्नति या अवनति पर राष्ट्र की उन्नति निर्भर है। मनुस्मृति में कहा गया है कि .....

स्त्रियां रोचसानायं सर्वं तद् रोचते कुलम्।
तस्यां तु अरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।।

स्त्री प्रसन्न है तो सारा कल ही आनंदमय हो जाता है। पत्नी के रूप सें नारी पति, पुत्र तथा ग्रहस्थ की सुख शांति की संरक्षिका मानी जाती थी। इसलिए वेद नारी को जागरूक रहने का आदेष देता है। वेदों में नर रूप को जहाँ परमपुरूष कहा गया है वही नारी को आदिशक्ति परम चेतना कहा गया है। सरल, सहज, समर्पण, सेवा एवं त्याग की प्रतिमूर्ति नारी आज 21वीं सदी में भी उत्पीडित है। स्त्री स्वतन्त्रता की मांग कर रही है, घर में काम करती गृहिणी, दफ्तर में काम करती स्त्री, कारखानों में काम करती स्त्री, मानवीय रिश्तों में बंधी स्त्री, पुरूष प्रेम के द्वन्द में दुविधाग्रस्त स्त्री, बौद्विक बनती स्त्री, अक्षर ज्ञान से वंचित स्त्री, साक्षर स्त्री, उच्च पद पर पदस्थ स्त्री, स्त्री.....? स्त्री .....? मुक्ति चाहती है।

मुक्ति को परिभाषित करते हुये फ्रायड ने लिखा है कि ''चयन और निर्णय की स्वतन्त्रता व्यक्ति के व्यक्तित्व एवम् मनोविज्ञान निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है''।

वैदिक काल की उच्च प्रस्थिति प्राप्त नारी का सच, पुरूष व्यवहार के समक्ष उजागर हो जाता है।

विश्व के प्राचीनतम् ग्रन्थ वेद हैं। वेद का अर्थ है ज्ञान या जानना।

भारतीय साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों का निरूपण प्राप्त होता है। वैदिक युग में नारी का माननीय स्थान रहा है। वैदिक युग में नारी सामाजिक, अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सभी प्रकार के कार्यों में भाग लेने में सक्षम एवं स्वतन्त्र थी। मनुस्मृति में ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''।

यह कहकर नारी के सम्माननीय पद की प्रशंसा की गयी है। वैदिक युग में स्त्री का समाज में उच्च स्थान था। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, सौन्दर्य का आदर्श रति में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, भगवान का आदर्श जगज्जननी में माना जाता था।

वेदों में नारी की स्थिति अत्यन्त गौरवास्पद वर्णित हुई है। वेद की नारी देवी है, विदुषी है, प्रकाश से परिपूर्ण है, वीरांगना है, वीरों की जननी है, आदर्श माता है, कर्त्तव्यनिष्ठ पत्नी है, सद्ग्रहणी है, सम्राज्ञी है, संतान की प्रथम शिक्षिका है, आचार्याणी बनकर कन्याओं को सदाचार और ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने वाली है, गुरू बनकर संमार्ग बताने वाली है, मर्यादाओं का पालन करने वाली है, जग में सत्य और प्रेम का प्रकाश फैलाने वाली है। यदि गुण कर्मानुसार क्षत्रिया है तो धनुर्विद्या में निष्णात होकर राष्ट्र रक्षा में भाग लेती है। यदि वैश्य के गुणकर्म है, उच्चकोटि कृषि, पशुपालन, व्यापार आदि में योगदान देती है। वेदों की नारी पूज्य है, स्तुति योग्य है, रमणीय है, आह्वान योग्य है, सुशील है, बहुश्रुत है, यषोमयी है।

पुरूष और नारी के विषय में आलंकारिक वर्णन है। पुरूष द्युलोक है तो नारी पृथ्वी है, दोनो के सामंजस्य से ही सौर जगत बना है, पुरूष साम है दोनो के सामंजस्य से ही सृष्टि का सामगान होता है, पुरूष वीणा दंड है तो नारी वीणा तन्त्री है, दोनों के सामंजस्य ही जीवन के संगीत की निःसृत झंकार होती है, पुरूष नदी का एक तट है तो नारी दूसरा तट है दोनों के बीच में ही वैयवितक और सामाजिक विकास की धारा बहती है।

पुरूष दिन है तो नारी रजनी है। पुरूष प्रभात है तो नारी उषा है। पुरूष मेघ है तो नारी विद्युत है। पुरूष अग्नि है तो नारी ज्वाला है। पुरूष आदित्य है तो नारी प्रभा है। पुरूष तरू है तो नारी लता है। पुरूष पुष्प है तो नारी कली है। पुरूष धर्म है तो नारी धरिता है। पुरूष सत्य है तो नारी श्रद्वा है। पुरूष कर्म है तो नारी विद्या है। पुरूष सत्व है तो नारी सेवा है। पुरूष स्वाभिमान है तो नारी क्षमा है।

दोनों के सामजंस्य में ही पूर्णता है। विवाह इसी सामंजस्य का प्रतीक है। वेदों में नारी के दो जन्म माने गये है। एक शरीरतः और एक विद्यातः। विद्यात जन्म होने पर नारी का पदार्पण जैसे ही विवाह वेदी पर होता है वैसे ही उसका कुल, व्रत, यज्ञ आदि सब कुछ बदल जाता है। उसके नाम, काम, रिश्ते नाते सब बदल जाते हैं। उसके दो कुल हो जाते है। एक पितृ कुल दूसरा पति कुल। स्त्री दोनों कुलों को जोडने वाली कली है।

वेदों में नारी को सम्मानजनक उच्च स्थान प्रदान करते हुए उनकी तुलना ब्रह्मा से की है। ब्रह्मा स्वयं ज्ञान के अधिष्ठाता है। इसी प्रकार नारी स्वयं ज्ञानवान होते हुए अपनी संतान को भी सुशिक्षित बनाती है।

'' स्त्री हि ब्रह्मा वभुविथ। (ऋग्वेद)

अथर्ववेद में नारी के सम्मान को वर्णित करने वाला श्लोक दृष्टव्य है–

अनुव्रतः पितुः पुत्रोः माता भवतु सम्मनाः।
जाया परमे मतुमतीं वाचं यददु शान्तिवाम्।।

वेदकाल में स्त्री शिक्षा का पर्याप्त प्रचार था। गार्गी मैत्रेयी आदि स्त्रियों ने शास्त्रार्थ में पुरूषों को पराजित किया था। इससे सुस्पष्ट है कि तत्समय महिलाओं को वेदाध्ययन हेतु उदारतापूर्वक प्रोत्साहित किया जाता था। कहीं– कहीं तो सहशिक्षा भी थी परन्तु यह सर्वत्र नहीं थी। अध्ययन कार्य में महिलाऐं पुरूषों के समान ही दक्षता प्राप्त करती थी। काव्य, संगीत, नृत्य तथा अभिनय आदि ललित कलाओं में वे बढ–चढकर ज्ञान अर्जन करती थी।

हारीत संहिता के अनुसार महिलाऐं दो प्रकार की होती थी, जिन्हें ब्रह्मावादिनी और सद्योवाह कहा जाता था। ब्रह्मावादिनी यज्ञान्नि प्रज्ज्वलित करने, वेदाध्ययन करने तथा अपने ही घरों से भिक्षा मांगने की अधिकारिणी थी। माधवाचार्य के मतानुसार स्त्रियों का विवाह ब्रह्मचर्यण कन्या युवानं विन्दते पतिम् उपनयन के पश्चात् ही होता था। उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्रियों में से कुछ आजन्म ब्रह्वाचारिणी रहकर आध्यात्मिक उन्नति में लगी रहती थी, इन्हें ब्रह्वावादिनी कहा जाता था। अन्य स्त्रियां ग्रहस्थ धर्म का संचालन करती थी, किन्तु गृहस्थ आश्रम में प्रवेश लेने से पूर्व वे ब्रह्मचारिणी रहकर अध्ययन कर चुकी होती थी।

द्विविधाः स्त्रियों ब्रह्मावादिन्यः सधोवाहष्व। तत्र ब्रह्मवादिनी नामन्नीन्थनं वेदाध्ययनं स्वग्रहे च भैक्षचर्यति। हारीतकृत वरिमित्रोदय

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अकेला पुरूष अपूर्ण है और जब वह विवाह करके संतान उत्पन्न करता है तभी पूर्ण होता है। वैदिक काल में समाज में पुरूषों की भांति स्त्रियों का भी उपनयन संस्कार होता था और वे ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश कर उच्चतम आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करती थी। अथर्ववेद में कुलवधु को संबोधित करके कहा गया है कि हे कुलवधु तू जिस नवीन घर में जाने वाली है तू वहाँ की साम्राज्ञी है। वहाँ तेरा राज होगा, तेरा श्वसुर, ननद, देवर तथा सास तुझे साम्राज्ञी समझेंगे।

वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों को पुरूषों के समान शिक्षा पूर्ण करने क अधिकार था। ज्ञान और अधिकारी के क्षेत्र में वे पुरूषों से किसी प्रकार कम नहीं थी। ऋग्वेद में लगभग 20 ऐसी विदुषी स्त्रियों के उल्लेख है जिन्होंने अनेकानेक सूक्तों की रचना की थी। इसमें लोपमुद्रा, विश्वधारा, घोषा, काक्षीवती, रोमाषा, सिकता, इन्द्राणी आदि स्त्रियों के नाम विशेष उल्लेखनीय है यजुर्वेद के अनुसार कन्या का विवाह ब्रह्मचर्यावस्था समाप्त कर लेने के पश्चात् ही करना चाहिए।

उपयाम ब्रहीतोडस्यादित्येभ्यस्त्वा।
विश्वडउरूगायैष सोमस्तं रक्षस्व मां त्वा दभन्।।

यजुर्वेद में स्त्री को ''स्तोम पृष्ठा'' कहा गया है। जिसका अभिप्राय यह है कि वह वेद मन्त्रों के विषय में पूछताछ करती थी।

प्राचीनकाल में यज्ञों एवं धार्मिक अनुष्ठानों का बहुत महत्व था और व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ ही यज्ञ कर सकता था, इसलिए स्त्रियों को विशेष रूप से वैदिक साहित्य की शिक्षा प्रदान की जाती थी ताकि वह धार्मिक क्रियाओं में अपने पति के साथ भाग ले सके।

बृहदारण्यक उपनिषद् में विदेह राज जनक की राजसभा में गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच वाद–विवाद का वर्णन मिलता है। जिसमें गार्गी ने अपनी अद्भुत प्रतिभा, विलक्षण तर्कशक्ति, सेधा और सूक्ष्म विचार तन्तुओं से दुरूह प्रश्नों की बौछार करके याज्ञवल्क्य जैसे विद्वान महापुरूष को मूक कर दिया था।

पी. एस. प्रभु ने अपनी पुस्तक ''हिन्दु सोशियल आर्गेनाइजेशन'' में लिखा है कि जहाँ तक शिक्षा का संबंध था महिलाओं तथा पुरूषों में कोई भेद नहीं था और इस युग में दोनों की सामाजिक स्थिति समान रूप से महत्वपूर्ण थी।

ए. एस. अल्तेकर के अनुसार ''महिला धर्म के मार्ग में बाधक नहीं थी। धार्मिक उत्सवों में पत्नी का सहयोग एवं उपस्थिति वांछनीय मानी जाती थी।

वेद युगीन महिलायें, वैदिक वाड.मय का विधिवत अध्ययन करती थी एवं यज्ञों में भाग लेकर मंत्रोच्चार भी करती थी। वैदिक समाज में धर्म के नाम पर महिलाओं के प्रति दुराचार नही किया जाता था। विवाह संस्कार सम्पन्न होने के बाद कन्याऐं अधिक सम्मान की पात्र हो जाती थी। प्रारम्भिक वेद युग में पत्नी ही यज्ञ में सोमगीतों का गान करती थी।

ऋग्वेद के मतानुसार स्त्री ही घर है। वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा एवं साहित्य के अध्ययन करने की पुरूष के समान स्वतंत्रता थी।